**डॉ जीतेन्द्र कुमार होता**
**सहायक प्राध्यापक (भूगोल)**
**भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)**

# पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा को नैतिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है। विश्व में पाये जाने वाले समस्त जीवों में मानव ही एक ऐसा जीव है जो कि अपनी बुद्धि एवं विवेक का उपयोग करता है जिससे सर्वोपरी बौद्धिक प्राणी माना जाता है मानव अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनेक ऐसी क्रिया विधि करता है जिसे अन्य प्राणीयों के लिए नामुमकीन है। मानव संस्कृति का निर्माण करता है यह एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहकर अपनी अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अपने व्यवहार उद्देश्य, कार्य का निर्धारण करता है। इसके साथ शिक्षा के मूल्य को आसानी से समझता है जो कि नितांत आवश्यक है शिक्षा के बिना हम अच्छाई एवं बुराई की पहचान नहीं कर पाते। वर्तमान में जितनी भी समस्याएं हमारे सामने आ रही है उसका प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव होना है जैसे स्वार्थ की भावना, लडाई, कामचोरी, लालच, एकता की भावना न होना, भविष्य की चिन्ता न करना प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना। जिससे पर्यावरण को स्वच्छ एवं संतुलित रखने  जीवन चक्र को अच्छे ढंग से संचालित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा का महत्व है शिक्षा का तात्पर्य आने वाले समस्त कठिनाईयों के कारण जानना उसके समस्या के समाधान के लिए उपाय करना एवं नई चेतना जागृत कर मानवीय आचरण को आदर्श बनाना।

शिक्षा की नींव घर के बुजूर्ग एवं माता पिता होते है जिनके माध्यम से बच्चों को प्रारंभिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। पर्यावरण शिक्षा की प्राप्ति के लिए शिक्षण संस्था में प्रवेश लेकर शिक्षकों द्वारा जीवन के मूल्य को समझते है। मानव को प्रकृति का पुत्र समझना चाहिए जिससे पर्यावरण प्रदूषण कम होगा जिसमें पशुओं को मारना, वृक्षों को काटना नहीं होगा। अनेक बुराईयों को छोड़ देगा जिससे पर्यावरण की अनेक समस्याओं को आसानी से समझा जा सकता है।

1970 में अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने स्कूली छात्रों के लिए पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप पर आयोजित की गई थी पर्यावरण शिक्षा दायित्व को जानने तथा विचारों को स्पष्ट करने के लिए मनुष्य अपनी संस्कृति, भू–जैव परिवेश के मध्य परस्पर सम्बद्धता को पहचानने और समझने के कौशल और अभिव्यक्ति का विकास होता है। पर्यावरणीय शिक्षा गुणवत्ता से सम्बन्धित प्रकरणों के लिए व्यावहारिक आचार संहिता के निर्माण करने एवं उपयुक्त निर्णय लेने की आदत को सुव्यवस्थित करती है। पर्यावरण शिक्षा वर्तमान मानव समुदाय के लिए आवश्यकता बन गई है हमारी संस्कृति की दृष्टि से प्राचीन काल से समृद्ध रही है। डॉ. नगेन्द्र सिंह का मत सुरक्षित एवं पर्याप्त पर्यावरण में शान्ति पूर्ण ढंग से मानव को रहने का अधिकार है जो उसके मूलभूत अस्तित्व से संबंधित है। ऐसी स्थिति में जो मानव के अपने अस्तित्व का मूलभूत कारण है उसे निःसंदेह मौलिक अधिकार की श्रेणी में रखा जाना चाहिए या मौलिक अधिकार का नाम दिया जाना चाहिए।

मानव अधिकार दिवस मनाने का निर्णय संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1950 में 10 दिसम्बर को रखा गया है जो कि सम्पूर्ण विश्व पर मनाया जाता है। मानव अधिकारों के वियेना विश्व सम्मेलन जून 1993 की संस्कृति के अनुरूप विभिन्न देशों ने मानव अधिकार को पालन करने के लिए राष्ट्रीय कमीशन या राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ;छण्भ्ण्ब्द्ध स्थापित किए। भारत का कमीशन का मुख्यालय दिल्ली में है इसके अध्यक्ष पद के लिए उच्च न्यायालय के पद पर आसिन न्यायमूर्ति को केन्द्र सरकार नियुक्त करती है।

वर्तमान में भारत में पर्यावरण शिक्षा या नैतिक शिक्षा पर अधिक जोर देने के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग के संयुक्त सचिव केशव देसी राजू ने बताया कि बच्चों को तकनीकी एवं विज्ञान के अध्ययन के साथ–साथ पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य करना आवश्यक है इसके लिए ठोस कदम उठाने के लिए पूरी दुनिया में पहल किया। जिसमें पाठ्य पुस्तकों के जरिए पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा पढाई जाए। हमें शोध एवं तकनीक के विकास में नैतिक शिक्षा को नहीं भूलना चाहिए जिस पर विशेष रूप से आई.आई.टी., आई. आई.एम. जैसी संस्था कार्य कर रही है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता निम्न क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण हैः–

1. पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना।
2. प्रदूषण का नियंत्रण करना जैसे मृदा, जल, वायु, प्रदूषण।
3. प्राकृतिक संसाधनों का अनियमित दोहन पर नियंत्रण।
4. पर्यावरण प्रभाव को आसानी से समझा जाता है।
5. शिक्षा का विकास जनचेतना का जागृत होना।
6. विश्व स्तर पर आपसी सम्बन्धों को बनाए रखने में पर्यावरण का विशेष महत्व है।

1. शिक्षा का उद्भव  व्यक्ति के चारों ओर विस्तृत पर्यावरण से हुआ है शिक्षा मानव के सोच–विचार, गणना में अन्तर लाता है प्रकृतिवाद के अनुसार कहा जाता है कि प्रकृति स्वयंमेव आदर्श शिक्षक है। विज्ञान प्रकृति एवं अध्यात्म के तथ्य संतुलन स्थापित कर के पर्यावरण शिक्षा का विकास किया जा सकता है।

2. मानव पर्यावरण का ही एक घटक है अपनी आवष्यकतानुसार पर्यावरण का सर्वाधिक दोहन करता है जिससे पारिस्थितिकी संतुलन में बिगड़ने की संभावना होती है एवं पारिस्थितिकी गुणवत्ता कम होती है स्वस्थ शरीर के लिए प्रदूशित पदार्थ एवं
प्रदूशित पर्यावरण हानिकारक होता है जिसके कारण पर्यावरण शिक्षा का महत्व बढ़ जाता है।

3. पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देष्य मानव हित में होता है जो कि अत्यन्त कठिन प्रक्रिया है पर्यावरण एवं मानव के मध्य संबंध के प्रति सजगता अर्थात मानव की क्रिया कलाप को विकसित करना तथा दोनों के मध्य अच्छा संबंध स्थापित करना है। पर्यावरण शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैः–

1. पर्यावरण का मानव जीवन एवं अन्य प्राणीयों पर प्रभाव को समझना।
2. पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के सम्बन्ध को समझना।
3. पर्यावरण के विभिन्न घटकों का उपयोग को समझना।
4. पर्यावरण की गुणवत्ता को बनाए रखना।
5. पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख स्रोतो एवं प्रभाव को जानना।
6. प्रदूषण दूर करने के उपाय की जानकारी देना।
7. पर्यावरण के प्रति जन चेतना जागृत करना।
8. पर्यावरण प्रबंधन हेतु योजना बनाना।
9. पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने हेतु शोध कार्य करना।

भारत में पर्यावरण शिक्षा के दिषा में सर्वाधिक प्रयास किए गए नवम्बर 1980 को पर्यावरणीय विभाग की स्थापना की गई जिसकी भूमिका निम्न क्षेत्रों में प्रगति पर रहा है। जिसके पर्यावरण से सम्बधित समस्त अनुसंधान एवं शेध कार्य के लिए शिक्षक एवं छात्रों को प्रोत्साहित करना पर्यावरण के प्रभाव का मूल्यांकन कर पर्यावरण संतुलन को बनाए रखना, पारिस्थितिकी विकास एवं पर्यावरण संबंधि सूचनाओं को एकत्रित कर उससे होने वाले समस्याओं को ढुंढना तथा निदान करना संसाधनों का संरक्षण करना राश्टीय एवं अन्तराश्टीय स्तर पर सम्बंधित अभिकरणों के साथ–साथ समन्वय स्थापित करना है।

1. पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाना।
2. सम्पुर्ण पर्यावरण के समस्या को समझना।
3. पर्यावरण की सुरक्षा एवं सुधार करना।
4. पर्यावरण समस्या के हल को खोजने की कौषलता प्राप्त करना।
5. पर्यावरण का मुल्यांकन करना।
6. पर्यावरणीय समस्याओं का उचित ढंग से निदान करना।

**पर्यावरण शिक्षा के निम्न प्रकार है–**

1. अनौपचारिक शिक्षा;–अनौपचारिक शिक्षा का तात्पर्य प्रौढ़ शिक्षा जिसमें वृद्धों को जो पढ़े लिखे नहीं होते या कामकाज में लगे लोगों का पढ़ाना से है जिसमें मानव जीवन एवं पर्यावरण के सम्बन्ध को समाझाना है कृशकों को कृशि कार्य में दवाईयों का उचित उपयोग जल एवं मृदा प्रदूषण को लोगों को समझाना, वृक्षों को काटने से होने वाली हानि समस्या को समझाना इत्यादि है।

2. औपचारिक शिक्षा–पर्यावरण से सम्बन्धित एक पाठ्यक्रम तैयार कर विद्यार्थीयों, कर्मचारियों, अधिकारियों को अवगत कराना जिससे उनका बौद्धिक, मानसिक विकास कर पर्यावरण के महत्व को समझना है जिसके लिए सेमीनार, व्याख्यान, संगोश्ठी, प्रशिक्षण तथा बेनर, पोस्टर के माध्यम से लोगों को जानकारी देना पर्यावरण शिक्षा है।

पर्यावरण शिक्षा में अनेक विविध पक्षों को जोड़ा जाता है।

(1) पर्यावरण के घटक में वनस्पति, जीव, मिट्टी, जल, जलवायु, स्थलाकृति को शमिल किया जाता है।

(2) पर्यावरण संरक्षण में प्राकृतिक समस्त संसाधनों एवं जनसंख्या नियंत्रण, प्रदूशित नियंत्रण को रखा जाता है।

(3) पर्यावरण समस्याएं में प्रदूषण, नगरीकरण, आपदाएं, वन विनाष, संसाधनों का ह्रास, ऊर्जा संकट को रखा जाता है।

(4) पर्यावरण प्रबंधन में पर्यावरण स्थलों का विकास राश्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य का विकास, प्रदूषण नियंत्रण, जनसंख्या नियत्रंण, पर्यावरण जनचेतना, पर्यावरण के अधिनियमों को जोड़ा जाता है।

(5) मानव पर्यावरण संबंध में मानव का पर्यावरण के आधार पर शरीरिक मानसिक एवं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकास होता है मानव पर्यावरण का ही एक अंग है।

(6) पर्यावरण उद्योग में कृशि कार्य तथा वानिकी, सिंचाई, पषुपालन, उद्योग धन्धे, ऊर्जा, परिवहन एवं खनिज उत्खनन करना इत्यादि है।

**पर्यावरण शिक्षा का महत्वः–**

पर्यावरण अवनयन से होने वाली समस्याएं वर्तमान में मानव समाज के लिए एक चुनौती है जिसके लिए पर्यावरण की शिक्षा की जानकारों के लिए कुछ कार्यक्रम एवं शिक्षा शेध पाठ्यक्रम तैयार कर जोड़ना आवष्यक है जिससे पर्यावरण शिक्षा का महत्व अनेक आधार पर उल्लेख किया जा सकता है।

(1) प्रकृति के वास्तविक अनुभवों को सरल से जटील रुप में सोचने–समझने एवं विचार करने में सहायक होती है।

(2) बच्चों एवं सामान्य व्यक्तियों के विचारों तथा पर्यावरण के तथ्यों को प्रमाणीत कर बतलाने में सहायक होती है।

(3) पर्यावरण शिक्षा से प्रत्येक छात्र के मन में उठने वाले विचार प्राणी एवं वनस्पति के सम्पुर्ण गतिविधि एवं महत्व को सहजता से समझा जा सकता है।

(4) पर्यावरण शिक्षा प्रत्यक्ष अनुभवों के प्रयोग से अनियोजित विकास पर नियंत्रण एवं विवेकपूर्ण संसाधनों का उचित उपयोग में सहायक होती है।

(5) पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण प्रदुशण के कारण तथा उनसे होने वाले समस्या जानने, निराकरण उपाय के लिए शेाध करने में सहायक होता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रोत्साहित करता है।

(6) पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक एवं धार्मिक आस्था को बढ़ाता है जिससे पृथ्वी के समस्त जीव–जगत एवं वनस्पति–जगत की उपयोगिता एवं महत्व समझा जा सकता है।

(7) पर्यावरण शिक्षा मानव को अच्छा एवं अहिंसात्मक जीवन जीने के लिए सहायक होता है।

पर्यावरण शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावकारी बनाने के लिए निम्न लिखित उचित उपाय अपनाऐ जाना चाहिए –

(1) प्राथमिक से उच्च स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में पर्यावरण सम्बन्धि जानकारी होना आवश्यक है।

(2) छात्रों को पर्यावरण प्रदूशण के बारे में जानने के लिए उचित साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए।

(3) स्कूल, कालेजों में पर्यावरण से संबंधित विशयों पर चर्चा–परिचर्चा, पोस्टर, रंगोली की प्रतियोगिता होनी चाहिए।

(4) पर्यावरण से प्रत्यक्ष अनुभव के लिए समय–समय पर स्कूल, कालेज छात्रों को
भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

(5) पर्यावरण सप्ताह मनाना आवष्यक है जिसमें वृक्षारोपण, वृक्ष कटाई पर रोक, वृक्षों का संरक्षण के आवष्यक बातें बताना चाहिए।

(6) औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा देना आवष्यक है जिससे सभी वर्ग के लोग पर्यावरण को समझ सकें।

(7) पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धित महत्व, समस्या एवं समाधान के उपायों के संदर्भ में शिक्षक, डॉक्टर तथा वैज्ञानिक एवं संस्था प्रमुखों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित करना आवष्यक है।

(8) पर्यावरण संरक्षण के लिए गैर सरकारी संस्था का स्थापित कर उन्हें प्रोत्साहन कर जनभागीदारी की अपील करना आवष्यक है।

(9) नगरीय क्षेत्र में पर्यावरण विकास के लिए प्रदूषण रहित क्षेत्र बनाने के लिए लोगों से सहयोग की अपील करना तथा प्रदूषण फैलाने वाले को अर्थदण्ड निर्धारित करना आवश्यक है।

———————————